10

विश्वास वाली बुद्धि (3:13-18)

उस अद्‌भुत गति पर विचार करें, जिससे मानवीय ज्ञान फैल रहा है! अनुमान लगाया गया है कि अब तक जितने भी वैज्ञानिक हुए हैं उनमें से जितने आज जीवित हैं वे उनका नब्बे प्रतिशत हैं और संसार में ज्ञान शरीर हर दस साल में दोगुना हो जाता है। ज्ञान के विकास की तेज़ गति स्पष्ट हो जाती है यदि आप रुककर उन उन्नतियों पर विचार करें जो आपने अपने जीवन में देखी हैं। वास्तव में कुछ वैज्ञानिक अनुसंधान किए और जमा किए गए ज्ञान को सम्भालने के बेहतर ढंगों की खोज में अपना जीवन बिता देते हैं।

समस्या यह थी कि ऐसा ज्ञान जमा करने के कारण मनुष्य यह मानने लगा है कि वह बहुत बुद्धिमान है। बुद्धिमानी की यह भावना मनुष्य को घमण्डी और अभिमानी बना देती हैं। बुद्धि की इस भावना से ही अन्तरर्राष्ट्रीय परमाणु हथियारों की दौड़, व्यवसायिक द्वेष, वैर और हर जगह व्यक्तिगत अशांति पाई जाती है। हमें सृष्टिकर्त्ता के बजाय सृष्टि की सेवा करने के लिए प्रेरित किया गया है, जो अपने ज्ञान का दावा और सेवा करने वाले मनुष्य का स्पष्ट अन्तर प्रतीत होता है (रोमियों 1:21, 22)।

यह तथ्य कि ''ज्ञान'' और ''बुद्धि'' बिल्कुल एक नहीं हैं। ज्ञान तथ्यों का इकट्ठा करना है, जबकि बुद्धि उस ज्ञान का *इस्तेमाल* करने की योग्यता है। ऐसा लगेगा कि हमारे संसार की प्रमुख समस्याओं में से एक यह है कि हमारा ज्ञान हमारी बुद्धि से अधिक हो गया है। जानकारी, हथियारों और तकनीक के दुरुपयोग को और बेहतर ढंग से कैसे समझाया जा सकता है। व्यक्तिगत रूप से वर्षों तक हम इस समस्या यानी वैज्ञानिक प्रतिभा पर हंसते रहे हैं जो उसके अपने जीवन को चलाने में सक्षम नहीं थी।

परन्तु अब याकूब एक नये विचार के साथ हमारे सामने आता है। बुद्धि और ज्ञान में केवल अन्तर ही नहीं है बल्कि वे दो तरह के हैं। याकूब उस बुद्धि की बात करता है जो ऊपर से आती है (विश्वास वाली बुद्धि) और उसकी जो संसार वाली है। हमारे वचन पाठ याकूब 3:13-18 में याकूब दोनों के बीच अन्तर बताता है। परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखकों के लिए अन्तर का इस्तेमाल करना सामान्य व्यवहार है। जैसे भजन संहिता 1 में भक्तिपूर्ण जीवन और अभक्ति के जीवन में अन्तर किया गया है। पौलुस ने शरीर के कामों में और आत्मा के फल में अन्तर किया। यीशु ने तंग और चौड़े फाटक, रेत पर बने घर और चट्टान पर बने घर में अन्तर किया। स्पष्टतया ये सब अन्तर जीवन की दो दिशाओं की ओर ध्यान दिलाते हैं। परन्तु याकूब उनकी बात कर रहा है जिन्होंने सही दिशा चुनी तो है, पर उस जीवन में गलत बुद्धि को दिखा रहे हैं।

बुद्धिमान व्यक्ति (3:13)

याकूब के प्रश्न कि ''तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है?'' (याकूब 3:13क) का उत्तर हम सब दे सकते हैं। लगता है कि परमेश्वर के लोगों की हर मण्डली में एक व्यक्ति ऐसा

होता है, जिसके पास आवश्यकता के समय लोग जाते हैं। उनका उसके पास जाने का कारण आवश्यक नहीं कि उसका अधिक ज्ञान हो, बेशक वह ज्ञानी भी हो सकता है, पर वे उसकी बुद्धि और समझ के कारण उसके पास जाते हैं। याकूब यह प्रश्न इसलिए पूछता है क्योंकि वह जानता है कि इसका उत्तर दिया जा सकता है। स्प्रिंग डेल, ऑरकैंसा की जिस मण्डली में मैं लगभग बारह साल तक आराधना में जाता रहा वह छह नौजवानों को पूर्णकालिक सेवक बनने में सहायता करती थी। मेरे विचार से उस ईर्ष्यायोग्य रिकॉर्ड का मुख्य ज़िम्मेदार जेम्स एन. नील था। लगभग साठ साल तक भाई नील ने इस मण्डली के ऐल्डर के रूप में सेवा की। वह जवानों को बाइबल की आयतें याद करवाता, प्रार्थना करवाता, आत्मिक बातें करता और उन्हें दर्जनों अन्य प्रकार से प्रोत्साहित करता। लोगों की पीढ़ियां बुद्धि और समझ के लिए उसकी ओर देखती थीं।

बुद्धिमान और समझदार व्यक्ति की पहचान ''अच्छा चाल-चलन और नम्रता सहित जो ज्ञान से उत्पन्न होती है, उसके काम'' हैं (याकूब 3:13ख)। अन्य शब्दों में ऊपर से बुद्धि पाया व्यक्ति आपको अपनी बुद्धि के बारे में नहीं बताएगा, परन्तु उसकी बातों, उसके सुनने और उसकी समझ के ढंग से यह दिखाई देगी। सबसे पसंदीदा मसीही फिल्मों में जिम्मी स्टुअर्ट अभिनीत *इट'स ए वंडरफुल लाइफ़* है। यह एक गुमनाम किस्म के गांवों के एक गुमनाम व्यक्ति की कहानी है, जो गुमनाम किस्म का कारोबार करते हुए *कुछ* बनने की चाह रखता है। जब भी उसे छोड़कर कुछ बनने का अवसर मिलता है, किसी न किसी को उसकी आवश्यकता पड़ जाती है। आवश्यकताओं से कभी धरती नहीं हिलती पर वे ऐसी बातें होती हैं जिन्हें वह कर सकता है। फिल्म में आगे चलकर, हर कोई कुछ न कुछ बन जाता है पर वही नहीं बनता। वह उन छोटी-छोटी बातों को करने के पीछे रहता है, जिन्हें वह कर सकता है, उसे यकीन है कि उसका जीवन बिल्कुल बेकार है। वह आत्महत्या करने ही वाला होता है कि एक स्वर्गदूत उस पर प्रकट होकर उसे दिखाता है कि उसके बिना उसका समाज कैसा हो जाएगा। उदाहरण के द्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि प्रेम के बेकार कामों ने वास्तव में पूरे समाज को बदलकर उसमें क्रांति ला दी थी। बेकार लगने के बावजूद एक व्यक्ति का जीवन अन्य कई जीवनों के परिणाम को सकारात्मक रूप से प्रभावित कैसे कर सकता है! ऐसी ही बातों की याकूब बात कर रहा है। अपने व्यावहारिक किस्म के ढंग में, याकूब हम से अपने दैनिक जीवनों में विश्वास की बुद्धि का इस्तेमाल करने का आग्रह करता है।

सांसारिक बुद्धि (3:14-16)

जैसा कि पहले कहा गया है, याकूब को ''भाइयों'' का ध्यान है जो संसार की बुद्धि दिखा रहे हैं। कोई पूछ सकता है, ''आप कैसे कह सकते हैं कि कोई संसार की बुद्धि दिखा रहा है?'' याकूब कहता है, ''पर यदि तुम अपने मन में कड़वी डाह और विरोध रखते हो'' (3:14)। सच्चाई की चीरफाड़ करने वाली छुरी चलाते हुए याकूब मुख्य बात के दिल में चीरा लगाता है। संसार की बुद्धि अपने आपको दिखाती है। ईर्ष्या और महत्वाकांक्षा परमेश्वर को समर्पित जीवन का फल नहीं है। वास्तव में उन्हें संसार के, वचन से बाहरी और शैतान के बताया गया है। वह यह भी कहता है कि इन सांसारिक व्यावहारों से पीछा छुड़ाने का एकमात्र ढंग टूटा मन और पिसी हुई आत्मा है। परमेश्वर घिसे-पिटे बहाने नहीं सुनेगा। हमारे कहने पर कि ''मैं ऐसा ही हूं! या तो

मुझे ग्रहण कर लें या छोड़ दें'', ''मैं सचमुच में कठोर या आलोचनात्मक नहीं हूं! मैं तो केवल मूढ़ और साफ़-साफ़ कहने वाला हूं।'' वह हमारी नहीं सुनेगा। जब तक हम अपने जीवनों में गलतियां मानना नहीं सीखेंगे तब तक हमें संसार की बुद्धि द्वारा अपनी इच्छा से चलाया जाता रहेगा। जब परमेश्वर की बुद्धि काम करती है तो यह देखने के लिए कि परमेश्वर को महिमा मिले दीनता की भावना पाई जाती है।

संसार की बुद्धि के विनाशकारी परिणाम निकलते हैं: ''इसलिए कि जहां डाह और विरोध होता है, वहां बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है'' (3:16)। लोगों को इकट्ठा करने के बजाय सांसारिक बुद्धि लोगों को फाड़ देती है। वर्षों से, मनुष्यजाति ने मनुष्य के दिमाग की क्षमता को साबित किया है। यह मानना कितना आसान है कि तकनीक, अनुसंधान आदि से मनुष्य जाति चतुर बनती रहेगी। हमें यह यकीन दिलाने के लिए कि सांसारिक ज्ञान और बुद्धि से भी अधिक की आवश्यकता है संसार की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्थितियों पर एक नज़र ही काफ़ी है। अच्छी बात यह है कि सांसारिक बुद्धि का विकल्प उपलब्ध है।

विश्वास वाली बुद्धि (3:17, 18)

बिना किसी शक के श्रेष्ठ बुद्धि परमेश्वर की ओर से ही मिलती है। याकूब ने पहले ही कहा है कि परमेश्वर बुद्धि देता है (याकूब 1:5) और हमें इसे विनम्रता और धन्यवाद के साथ लेना आवश्यक है।

इस बात के लिए कि हमें ऊपर से मिली बुद्धि की पहचान हो जाए, याकूब इसे सात विशेषताओं के साथ चित्रित करता है।

पवित्र। परमेश्वर जिसकी हम सेवा करते हैं ''पवित्र'' परमेश्वर है, और बुद्धि जो वह देता है वह बुराई के साथ किसी तरह की मिलावट वाली बुद्धि नहीं है। विश्वास की बुद्धि वाला व्यक्ति वह है, जो स्वार्थ और स्वार्थी महत्वाकांक्षा से मुक्त है। पवित्र व्यक्ति के आचरण के पीछे कोई गलत उद्देश्य नहीं होता।

मिलनसार। विश्वास की बुद्धि वह बुद्धि है जो सही सम्बन्ध बनाती है क्योंकि इससे लोग एक-दूसरे के निकट आते हैं। विश्वास की बुद्धि व्यक्ति को प्रेम करने वाला मन और मेल मिलाप का मन देती है। परमेश्वर की ओर से मिली बुद्धि व्यक्ति को ''लड़ाई मोल लेने'' या दूसरे के काम में टांग अड़ाने में आनन्द लेने वाला व्यक्ति नहीं बनने देती।

कोमल। यह शब्द कठिन है क्योंकि यूनानी भाषा के लिए इसके समान अंग्रेज़ी या हिन्दी शब्द नहीं है। कारल सैंडबर्ग ने एक बार अब्राहम लिंकन को ''मखमली लोहा'' कहा था। ''विचारशील'' के अर्थ वाले शब्द का सम्भवतया यह अच्छा विवरण है। यह वह गुण है, जो यीशु ने उस समय दिखाया जब उसने व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री की ओर देखा (यूहन्ना 8) और उसे क्षमा किया था।

मृदुभाव। कोई अधीनता की सभी किस्मों की बात कर सकता है और हो सकता है कि उसके कहने का अर्थ वह न हो जो याकूब का था। यदि हम इस शब्द को उस अर्थ में से निकाल लें, जिसमें इसका इस्तेमाल किया गया था, तो इसका अर्थ है कि सममुच में बुद्धिमान व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञा मानने को सदैव तैयार और इच्छुक रहता है।

दया और अच्छे फलों से लदा हुआ। ये दो शब्द इकट्ठे चलते हैं और इन्हें आयत 16 वाले ''डाह और विरोध'' के विपरीत के रूप में देखा जाना चाहिए। ''दया'' के लिए शब्द का मूल अर्थ परेशानी में पड़े लोगों के लिए तरस है और इसे ''अच्छे फल'' के साथ जोड़ा गया है क्योंकि मसीही करुणा केवल भावना कभी नहीं रही। मसीही व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि उसे किसी ज़रूरतमंद व्यक्ति पर तरस आ गया था, जब तक उस ज़रूरतमंद व्यक्ति की सहायता नहीं होती।

पक्षपात रहित। पुन: इस शब्द का अनुवाद कठिन है क्योंकि यूनानी नये नियम में इसका इस्तेमाल केवल यहीं हुआ है। अधिकतर टीकाओं में अनुमान लगाया जाता है कि ''निर्णायक'' बेहतर अनुवाद हो सकता है। विश्वास वाली बुद्धि का स्वभाव स्थिर है और यह अपने आपको विश्वास और कार्य में निरन्तर होकर दिखाती है।

कपट रहित। सच्ची बुद्धि ईमानदार है और यह वह होने का दिखावा नहीं करती जो यह है नहीं। दूसरों के साथ अपने सम्बन्ध में हमें बेईमानी के संकेत के बिना और तथ्यों को छिपाए बिना, ईमानदार होना आवश्यक है। विश्वास वाली बुद्धि कहती है कि अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए कभी काम न करो।

सारांश

राज्य के विकास के लिए हमारे मसीही जीवन की आत्मा उतनी ही आवश्यक है, जितनी वह सच्चाई जिसका हम प्रचार करते हैं। इसी लिए तो याकूब कहता है, ''मिलाप करने वालों के लिए धार्मिकता का फल मेल-मिलाप के साथ बोया जाता है'' (3:18)। हमारे जीवन से पता चलता है कि हम क्या हैं, और अपने जीवन से ही हम बोते हैं।

आवश्यक नहीं कि सब में प्रतिभावान व्यक्ति वाली आई क्यू ही हो, पर सब में याकूब द्वारा बताई गई बुद्धि हो सकती है। ये वे दान हैं जो परमेश्वर की ओर से मिलते हैं यानी हमें ये दान मांगने चाहिए।